RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

स्त्री चिंता एवं सरोकार के बहस-मुबाहसे: 'स्त्री दर्पण' पत्रिका के बहाने

मनीष कुमार सिंह
शोध छात्र, म. गां. अं. हिं. वि. वि. वर्धा

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 May 2019

Keywords
स्त्री दर्पण, जागरूकता, स्त्री शिक्षा, सामाजिक कुरीतियाँ .

***Corresponding Author**
Email: manish.singh12290[at]gmail.com

ABSTRACT

दुर्भाग्य से भारतीय प्रेस व प्रकाशन में महिलाओं की सक्रियता के इतिहास का दस्तावेजीकरण लगभग न के बराबर हुआ है। ब्रिटिश काल के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप में सामाजिक परिवर्तन बहुत तेजी से हुये। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में महिलाओं की शिक्षा को पुरुषों की शिक्षा के समान महत्व दिया जाने लगा । शिक्षित होने के पश्चात महिलाएं कई क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाने ल गीं जिसमें से एक प्रेस था। ज्ञातव्य है कि शुरुआत में शिक्षित महिलाए 'अभिजात्य वर्ग या उच्च जातीय महिलाएं थीं। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक के अंत से व दूसरे दशक प्रारम्भ से महिलाओं की आवाज हिंदी पत्रकारिता में मुख्य रूप से सामने आना शुरू होती है। यही वह दौर था जब हिंदी पत्रकारिता महिलाओं के मानसिक विकास करने के साथ - साथ उन्हें उन प्रश्नों से मुक्ति दिलाने की कोशिश कर रही थी जो जिसने उनके शरीर और दिमाग को जकड़ रखा था। इसी क्रम में हम स्त्री दर्पण पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ होता है जो कि जो महिलाओं में जागरूकता प्रसार कर रही थी। प्रस्तुत लेख में स्त्री दर्पण के विषय वस्तु विश्लेषण के जरिये तत्कालीन संदर्भ में स्त्री मुद्दो पर बात की गयी है।

19वीं सदी के अंतिम दशक में भारत में नारीवादी चेतना जागृत होने लगी थी जिसे स्त्री नेतृत्व वाले आंदोलनों और संगठ नों से जोड़कर देखा जा सकता है। यही वह समय था जब भारतीय महिलाएं पहली बार पारिवारिक और सामुदायिक दायरे से बाहर निकल कर सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही थीं। उनकी यह उपस्थिति पुरुषों की सहायक अथवा पैसिव न होकर उनके कृतित्व के उदाहरण (विमेन एजेंसी) प्रस्तुत करती है। उन्नीसवीं सदी के स्त्री प्रश्नों में 'महिलाएं क्या चाहती है के स्थान पर उन्हें कैसे आधुनिकता के साँचे में ढाला जा सके जैसे सरोकार ज्यादा थे।[i] बाद के समय यानी बीसवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में महिलाएं अपनी बेहतरी के लिए स्वयं प्रयास करने ल गीं। जबकि अभी तक स्त्री प्रश्नों को आधुनिक विचारों से लैस कुछ पुरुष ही उठाते रहे थे। अपनी समस्याओं से बेखबर महिलाओं को व पितृसत्तात्मक सामाजिक नेतृत्व को हर एक पहलू से अवगत क राने के लिए अब महिलाओं ने अपनी जिम्मेदारी समझी और उसके लिए आगे आकर पहल भी किया। चूँकि अभी तक स्त्रियों की समस्याओं को पुरुषों के नजरिये से ही देखा-समझा जाता था। इसी संदर्भ में देश भर में स्त्रियों के छोटे-बड़े संगठन बनने लगे थे, जिनमें स्त्रियों की समस्याओं पर बहसें होती और उन्हें जागरूक करने के प्रयास किए जाते थे। इन आंदोलनों ने कमोबेश मात्र में व्यक्ति-स्वातंत्र्य, सामाजिक एकता और राष्ट्रवाद के सिद्धांतों पर ज़ोर दिया।[ii] पिछली सदी से इस सदी मे परिवर्तन के पीछे निस्संदेह हिन्दी साक्षरता, शिक्षा और छपाई (प्रिंटिंग प्रेस) के सामान्य विस्तार का हाथ था साथ ही प्रथम विश्व युद्ध और असहयोग आंदोलन में लोगों की अधिक व्यापक हिस्सेदारी का भी। अगर हम प्रेस जगत में सक्रिय महिलाओं के सामाजिक पृष्ठभूमि को देखें तो यह उच्च जाति एवं उच्च वर्ग की महिलाएं थीं। इन गिनी चुनी संभ्रांत महिलाओं ने महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति के खिलाफ चेतना संचार करने उद्देश्य से देश के अलग-अलग भाषायी क्षेत्रों में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू किया।

हिन्दी क्षेत्र में महिला संपादित पत्रिका की शुरुवात करने का श्रेय रामेश्वरी नेहरू को जाता है , उन्हों ने ही *'स्त्री दर्पण'* (जून,1909) नामक पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन इलाहाबाद से किया। अगर यह कहा जाए कि हिन्दी क्षेत्र में महिला आंदोलन नेतृत्व और जागरूकता प्रसार का कार्य 'स्त्री दर्पण' ने किया तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी , किन्तु इतिहास में इसे इसकी महत्ता के अनुसार स्थान नहीं मिला। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में इन महिला पत्रिकाओं ने भारत में राष्ट्रवादी-नारीवादी विचार को निर्मित करने में अहम भूमिका निभाई। 'शोबना निझावन' के अनुसार सामाजिक संक्रमण एवं राजनीतिक स्वतंत्रता के संघर्ष के काल में हिन्दी पत्रिकाएँ आभिजात्य एवं मध्यवर्गीय महिलाओं के सोचने और स्थानीय स्तर पर लोगों के लिए सामाजिक-राजनैतिक संचार की साधन भी बनी।[iii] उत्तर भारत (तब का संयुक्त प्रांत) से निकलने वाली शुरुआती हिन्दी महिला पत्रिकाओं मे से एक 'स्त्री दर्पण' ने महिलाओं को सार्वजनिक क्षेत्र में आने के लिए न सिर्फ एक मंच प्रदान किया बल्कि पूरे स्त्री समुदाय से दमनकारी और गुलाम बनाने वाली पितृसत्तात्मक संरचनाओं को पहचानने के साथ ही लेखन एवं पाठन के द्वारा उन शोषणकारी व्यवस्था से स्वयं को मुक्ति दिलाने की अपील की। चूंकि 'स्त्री दर्पण' महिलाओं के लिए महिलाओं द्वारा निकाली जा रही पत्रिका थी, इसलिए इसकी प्रासंगिकता अन्य तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं से बढ़ जाती है। जुलाई 1915 के संपादकीय में रामेश्वरी नेहरू ने इस पत्रिका के उद्देश्य के प्रति दृढ़ता दिखाते हुए लिखती हैं-"भारतीय स्त्री को मनुष्योचित पद दिलाना शुरू से ही इस पत्रिका का लक्ष्य रहा है , इस लक्ष्य की प्राप्ति दो प्रकार से हो सकती है। एक तो स्त्रियों के प्रति पुरुषों के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विचारों के परवर्तित होने से, दूसरे स्त्रियों के स्वयं जागृति से। दर्पण अपनी लघु चेष्टाओं द्वारा बराबर इन दोनों बातों का प्रयत्न कर रहा है। इस पत्र में जहां स्त्रियों के प्रति पुरुषों के कर्तव्य दिखाये जाते हैं वहीं स्त्रियों का ध्यान उनके असीम उत्तरदायित्व पर भी दिलाया जाता है"।[iv] उद्धरण में हम देख सकते हैं कि संपादिका ने बहुत उदार लहजे में महिलाओं को अधिकार दिलाने की बात कही है किन्तु ध्यान देंने योग्य बात यह है कि इसके लिए उन्होंने पुरुषों से महिलाओं के प्रति मानसिकता में परिवर्तन की बात कही है। आज से ठीक 100 साल पहले एक महिला स्त्रियों के प्रति पुरुषों की मानसिकता बदलने की जरूरत महसूस कर रही थी लेकिन आज भी हम देख सकते कि नारीवाद की विभिन्न धाराओं और आंदोलन के बावजूद कमोबेश वही सोच बरकरार है। 'स्त्री दर्पण ' ने तत्कालीन सामाजिक समस्याओं के साथ राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर भी अपना सरोकार दिखाया। इसमें महिलाओं के लिए एक नया मॉडल प्रस्तुत किया जो कि आत्मविश्वासी एवं अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने वाली हो। स्त्री दर्पण पत्रिका ने उत्तर भारत में महिलओं को जागृत करने में अहम भूमिका निभाई। पत्रिका में महिलाओं की समस्याओं से संबंधित सभी मुद्दों पर महिलाओं के द्वारा लेख छपते रहते थे। हालांकि पुरूष भी इसमें लिखते थे, लेकिन पत्रिका का लक्षित पाठक वर्ग विशेष रूप से महिलाएं ही थीं। इसमें स्त्रियों की भिन्न-भिन्न समस्याओं जैसे अशिक्षा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, पुरूषों, द्वारा बहुविवाह, विधवा पुनर्विवाह आदि विषय पर समय-समय पर लेख प्रकाशित होते रहते थे। राष्ट्रवादी आन्दोलन में महिलाओं की हिस्सेतदारी तथा स्वराज्य में महिलाओं का स्थान आदि विषयों पर भी लिखा जाता था।

स्त्रियों की शिक्षा से संबंधित लेखों में स्त्रियों को शिक्षित किये जाने को लेकर बहुत ही सरल शब्दों में वकालत की जाती थी। स्त्री शिक्षा पर पुरूष महिला दोनों लिखते थे। उस समय शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ महिला को अच्छी गृहणी बनाना था, न कि उन्हें रोजगारपरक शिक्षा द्वारा पुरुषों के समान बनाना , जिससे वे घर से बाहर सार्वजनिक दुनिया में पुरूषों से कंधे-से-कंधा मिलाकर चल सकें। शिक्षा को बढ़ावा देने वाले जो लेख महिलाओं द्वारा लिखे होते थे वे भी पुरूषों की मानसिकता से प्रभावित होते थे, इसीलिए वे भी पुरूषों द्वारा गढ़ी गयी आदर्श महिला की रूपरेखा के बाहर बात नहीं कर पाती थीं। महिलाओं से संबन्धित चिंताओं में सबसे प्रमुख स्त्री अशिक्षा ही थी। महिलाओं की शिक्षा को लेकर हमें कई तरह के विचार मिलते हैं जिसमें कुछ परंपरावादी उनके शिक्षित होने से चिंतित थे एवं उन्हें सिर्फ अनौपचारिक शिक्षा ही देने की वकालत करते थे। इन्हें सबसे ज्यादा डर महिलाओं के पश्चिमीकृत होने से था। अगर हम उस समय की शिक्षा को लेकर होने वाली बहस को देखेंगे तो पाएंगे कि स्त्री शिक्षा की आवश्यकता को सारे लोग स्वीकार रहे थे लेकिन उन्हें उनकी चिंता और चर्चा का विषय यह था कि उनकी शिक्षा कैसी और कहां तक हो। अधिकांश लोगों का विचार महिलाओं के लिए सीमित शिक्षा का ही था। दिसम्बर 1917 में 'स्त्री दर्पण' में 'स्त्री शिक्षा की आवश्यकता' नामक लेख में महिलाओं की शिक्षा को लेकर भ्रम व्यक्त किया गया था। इसके प्रत्युत्तर में रामेश्वरी नेहरू ने एक लेख लिखा कि स्त्री शिक्षा किस आधार पर होनी चाहिए-"स्त्री कि शिक्षा इन लक्ष्यों को सामने रखकर होनी चाहिए प्रथम मनुष्यत्व द्वितीय स्त्रीत्व। वह स्त्री होने से पहले मनुष्य है। उसमें इस बात की शक्ति पैदा करनी चाहिए कि वह अपने इस पद को स्वतंत्र रूप से निभा सके। और अपने देश , समाज और समस्त संसार के प्रति मनुष्य का जो कर्तव्य है उसका पालन कर सके"।[v] स्त्री शिक्षा के लिए इस भ्रम एवं तथाकथित चिंताओं व खतरों के बावजूद हम देखते हैं कि बीसवीं सदी के प्रथम चतुर्थांश तक बड़ी संख्या में महिलाएं शिक्षित हो चुकी थी। प्रथम पीढ़ी की महिलाओं ने शिक्षित होकर अपने जीवन और परिस्थितियों के बार मे आवाज उठाई एवं दूसरी पीढ़ी ने महिलाओं की जरूरतों को स्पष्ट करने के साथ समाज व विदेशी शासन को आलोचना के साथ ही स्त्रियों के हित के लिए संस्थायें विकसित की उस समय समाज में स्त्रियों की स्थिति को बदतर करने में वाली कुप्रथाओं में बाल विवाह प्रमुख था। इसका संबंध अशिक्षा और जागरूकता की कमी से था। अन्य तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को भयावह रूप देने में इसका अत्याधिक भूमिका थी। अतः रामेश्वरी नेहरू के संपादकत्व में इसे प्रमुखता से उठाया गया। बाल विवाह से संबंधित कई कहानियों को 'स्त्री दर्पण' ने धारावाहिक के रूप में तथा एकल रूप (प्रत्येक अंक में अलग कहानी) छापना शुरू किया जो कि महिलाओं की आप बीती होती थी। धारावाहिक कहानी के रूप में जुलाई 1915 से 'सरला-एक विधवा की आत्मजीवनी' शीर्षक से छापी गयी। यह एक सात आठ वर्ष की विवाहिता की कहानी थी। इसी तरह मई 1920 में 'विद्यावती खन्ना' ने 'बाल विवाह और उससे जाति की हानियां' शीर्षक में बाल विवाह की ऐतिहासिकता दिखाने की कोशिश करते हुये कहती हैं कि वैदिक काल में यह प्रथा नहीं थी इसे प्रारम्भ करने के लिए वह बौद्धयान व अन्य स्मृतिकारों को जिम्मेदार ठहराती हैं। इसी लेख में वह बाल विवाह के आंकड़े प्रस्तुत करती हैं। "आज हमारे देश में 10507 विवाहित कन्याएँ हैं जिनकी आयु एक वर्ष से कम है और जो अभी माता का दूध पीती हैं। चार वर्ष की आयु की कन्याओं की संख्या 2,58,760 है और पाँच से नौ वर्ष के बीच की कन्याओं की संख्या 2,21,404 है और 10 से 14 वर्ष वालिकाओं की संख्या 60,16,759 हैं'।[vi] इन आकड़ों से बाल विवाह की भयावहता की कल्पना की जा सकती है। बाल विवाह के विरोध में गांधी जैसे नेताओं की भाषण को भी 'स्त्री दर्पण' में जगह दी जाती थी। चूंकि 'स्त्री दर्पण' संभवतः शारदा अधिनियम के पारित होने तक बंद हो गयी थी अतः बाल विवाह निरोधक अधिनियम के बारे में इसमें कोई जानकारी नहीं मिलती है। बाल विवाह के साथ 'स्त्री दर्पण' ने विधवा महिलाओं की समस्याओं को दूर करने के लिए व उनके साथ होने वाले कुरीतियों पर भी कटाक्ष करती थी। बाल विवाह के कारण ही विधवाओं की संख्या बढ़ रही रही थी। पति की मृत्यु के बाद होने वाली रीतियाँ इसे अमानवीय साबित कर रही थी। विधवाओं की दयनीय हालत को दर्शाने वाला एक लेख जून, 1921 में 'विधवा विवाह और सामाजिक पतन' शीर्षक से छपा जिसे रामरख सिंह सहगल ने लिखा था। लेख में लेखक ने विधवा महिलाओं के अनुभव लिखे हैं। जिनके विधवा होने पर उनके साथ उनके घर वालो का व्यवहार और उन्हें घर से निकाल देने का जिक्र है। विधवाओं को समाज में सम्मान दिलाने के लिए स्त्री दर्पण में उनके पुनर्विवाह पर जोर दिया गया। तत्कालीन समस्याओं को ट्रेस करने एवं उनका समाधान ढूँढने के क्रम में

'स्त्री दर्पण' ने पर्दा प्रथा पर भी लोगों को ध्यान केन्द्रित किया। पर्दा प्रथा का इतना अधिक कुप्रभाव था कि यदि कोई महिला बीमार पड़ जाए तो वह किसी अन्य पुरुष से अपनी समस्या व्यक्त तक नहीं करती थी। स्त्री शिक्षा की तरह पर्दा प्रथा से संबंधित लेख भी उससे होने वाली हानियों के बारे में आदि बताते थे। पर्दा प्रथा पर लिखने वाले सभी लेखक परदे की प्रथा को मध्य काल में मुस्लिम शासकों द्वारा लाया गया मानते थे। 'स्त्री दर्पण' द्वारा सामाजिक मुद्दों की व्यापक दायरा कवर करने के कारण ही कमलेश मोहन ने इसे 'सामाजिक क्रिया पत्रिका' (सोशल एक्शन जर्नल) कहा गया है। स्त्री संबन्धित सभी समस्याओं को प्रमुखता एवं प्रगतिशील तरीके से उठाने वाली 'स्त्री दर्पण' में सती प्रथा को लेकर रूढ़िवादी व परंपरागत विचार वाले लेख मिलते हैं जिनमें सती स्त्रियों को पतिव्रता, धर्म परायण आदि कहकर उनकी सराहना भी की गयी है एवं उन्हें आधुनिक शिक्षा और फैशनपरस्ती से अलग सच्ची नारी कहा गया है। स्त्री दर्पण की संपादिका ने मई 1920 के अंक में सतीत्व का महिमामंडन करते हुये लिखती हैं "यद्यपि सरकारी कानून से चीता पर पति के मृत शरीर संग जल मरने की रीति रोक दी है किन्तु सच्ची सतियाँ अब तक अपने पति के शरीर छोड़ देने पर प्राण देने पर नहीं घबराती हैं जिसे देख कर अचरज से चकित रह जाना पड़ता है"।[vii] हम अंदाजा लगा सकते हैं कि जब 'रामेश्वरी नेहरू' जो कि 'नेहरू' जैसे सुशिक्षित व प्रगतिशील परिवार से संबंध रखने वाली महिला सती प्रथा के बारे में स्त्री विरोधी सोच से मुक्त नहीं हैं तो शेष अशिक्षित समाज के बारे में हम सहज ही कल्पना कर सकते हैं। अन्य प्रमुख मुद्दों में बेमेल विवाह,विधवा विवाह, जेवर, तिलक, दहेज एवं स्वास्थ्य से संबन्धित विषयों पर जागरूकता का प्रसार भी 'स्त्री दर्पण' कर रही थी।

निष्कर्ष

स्त्री दर्पण की समकालीन अन्य पत्रिकाएं 'गृहलक्ष्मी','आर्यमहिला' आदि को देखें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि 'स्त्री दर्पण' स्त्रियों की समस्याएँ उठाने में बाकी पत्रिकाओं से ज्यादा मुखर थी। इसका प्रभाव भी उल्लिखित दोनों पत्रिकाओं से अधिक था। संभवतः 'स्त्रीदर्पण' बीसवीं सदी की पहली महिला पत्रिका थी जिसने हिन्दी क्षेत्र के महिला आंदोलन में सबसे प्रभावशाली स्थान प्राप्त किया। अपने 20 वर्ष के सफर में 'स्त्री दर्पण' ने स्त्री विरोधी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ मुहिम जारी रखी। हालांकि इसका प्रकाशन बाद में कानपुर से होने लगा था। इसके शुरुआती अंक और 1920 के बाद मे अंको की विषय वस्तु देखें तो बाद में प्रखरता की कमी आने लगी थी यह संभवतः संपादकों के बदलने से हुआ। लेकिन सम्पूर्ण प्रभाव की बात करें तो 'स्त्री दर्पण' अपने इस सफर में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक वैचारिकी के स्तर पर समस्याओं को उठाने में सबसे अग्रणी रही है।

संदर्भ सूची

[i] Forbes, Geraldine. *Women in Modern India*. Page 12

[ii] देसाई, आर, ए. *भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि पृ191* .

[iii] Nijhavan, Shobna .*Women and girls in the hindi Public Sphere: Periodicle Literature In colonial North India.* page 3.

[iv] स्त्री दर्पण. जुलाई .1915

[v] स्त्री दर्पण'. दिसंबर 1917

[vi] स्त्री दर्पण'. मई 1920

[vii] स्त्री दर्पण'. मई.1920

RRIJM 2015, All Rights Reserved